ISSN (O): 2320-5407
ISSN (P): 3107-4928

Journal Homepage: - www.journalijar.com

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH (IJAR)

Article DOI: 10.21474/IJAR01/23056
DOI URL: http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/23056

CONFERENCE PAPER

उत्तर भारत के प्रमुख विश्वविद्यालयों में शास्त्रीय संगीत के संरक्षण और संवर्धन की भूमिका

स्वर्णिमा मिश्रा[1] एंड डॉ. ज्योति मिश्रा[2]

1. शोध छात्रा संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय.
2. सहायक आचार्य संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय.

Manuscript Info

Manuscript History
Received: 04 January 2026
Final Accepted: 08 February 2026
Published: March 2026

Key words:-
विश्वविद्यालय , संगीत शिक्षण , परंपरा ,शिक्षा , उत्तर भारत

Abstract

संगीत मानव समाज की कलात्मक उपलब्धि है । यह लयकारी सांस्कृतिक परंपराओं का एक मूर्तिमान प्रतीक है और भावना की एक उत्कृष्ट कृति है। यह अमूर्त भावनाओं को मूर्त रूप देने का एक सफल माध्यम है । इसमें हृदयस्पर्शिता है और यह मानव तथा प्रकृति के कण -कण में व्याप्त है । इसके साथ ही संगीत एक सम्मोहक कला है, जो सर्वसाधारण को आकृष्ट करती है । इस परिष्कृत कला द्वारा आध्यात्मिक सोपान एवं सिद्धि तक पहुँच संभव होती है। सामान्य शिक्षा मानसिक विकास की दृष्टि से एवं संगीत की शिक्षा मानसिक एवं आत्मिक शक्तियों के परिष्कार की दृष्टि महत्वपूर्ण है। इन दोनों प्रकार की शिक्षाओं से ही मनुष्य जीवन दृष्टि व जीवन मूल्यों के गहनतम आदर्शों से परिचित होकर समाज के लिए कल्याणकारी सिद्ध होता है। शिक्षा मानव की सर्वांगीण उन्नति का एक ऐसा आधार है जो उसके व्यक्तित्व के विकास का कारण बनती है। बालक में अंतर्निहित जन्म से ही शक्तियों का परिष्कार करके उनमे से दोषपूर्ण शक्तियों का निराकरण तथा आंतरिक गुणों का निखार कर 'शिक्षा' ही उसके व्यक्तित्व का निर्माण करती है। यह व्यक्तित्व ही मानव के अपने लिए तथा साथ ही साथ समाज के लिए संस्कृति व देश के लिए और अंततः सम्पूर्ण राष्ट्र एवं विश्व के लिए कल्याणकारी

"© 2026 by the Author(s). Published by IJAR under CC BY 4.0. Unrestricted use allowed with credit to the author."

Corresponding Author:- स्वर्णिमा मिश्रा
Address:-शोध छात्रा संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय.

सिद्ध होता है । शिक्षा केवल ज्ञान अथवा जीविका का उपार्जन नहीं है बल्कि शिक्षा सम्पूर्ण जीवन के परिष्कार एवं विकास की प्रणाली है । शिक्षा का उद्देश्य मानवीय जीवन का चारों ओर से अधिक से अधिक विकास करना है। शिक्षा का उद्देश्य बालक को केवल इतिहास, भूगोल , व्याकरण , गणित इत्यादि विषयों का ज्ञानकराना मात्र नहीं , वरन बालक की रुचियों तथा उसकी जन्म से ईश्वरीय देन प्रतिभा व शक्तियों का सम्यक विकास करना है। संगीत द्वारा स्मृति , कल्पना और रचना – शक्ति का विकास होता है । गाते बजाते समय गायक की कल्पना और उसकी अभियक्तिमें जितनी नवीनता होती है वह उतना ही उच्चकोटीका समझा जाता है।

Introduction:-

संगीत शिक्षण की प्राचीन परंपरा तथा उसके मूलभूत तत्वों के संबंध में परिचय , विशिष्ट लक्षण ग्रंथों के रूप में संस्कृत साहित्य में उपलब्ध नहीं होगा । आधुनिक अर्थ में प्राचीन शिक्षा शास्त्र के सिद्धांतों का विवरण भी ग्रंथ के रूप में एक स्थान पर कहीं नहीं प्राप्त होता है तथापि उसके संबंध परिज्ञान तत्कालीन विभिन्न ग्रंथों में न्यूनाधिकमात्रामें विकीर्ण पाया जाता है,इन्ही विकीर्ण सूत्रों को एकत्रित करने पर प्राचीन संगीत शिक्षा कीप्रणाली तथा शिक्षा के सर्वमान्य सिद्धांतों के संबंध में एक मानचित्र प्राप्त हो जाता है । प्राचीन कालीन संगीत प्रणाली पर दृष्टिपात करने पर ज्ञात होता है की वैदिक काल में सामवेद की बहुत सी शाखाएं थीं जिनमें तीन ही अधुना उपलब्ध हैं ये शाखाएं निम्न हैं-

1- जैमनीय
2-कौथुमीया
3- राणानीया

संगीत शिक्षण पद्धति के संबंध में अधिकतर स्थानों पर व्यतिगत शिक्षण पद्धति (जिसे गुरु शिष्य परंपरा कहा जाता है) का ही उल्लेख मिलता है। बहुत से स्थान पे ऐसा उल्लेख भी पाया जाता है की भारतीय दर्शन , ज्ञान , विज्ञान एवं कला सभी में इसी गुरु शिष्य – परंपरा ने क्रांति पैदा की है।गुरु ने जितना अपनी तपस्या , साधना अथवा प्रयोगों से जाना वह सब उसने अपने शिष्यों में बाँट दिया और शिष्यों ने भी जितना अपने गुरु द्वारा ग्रहण किया इसे अपनी प्रतिभा , साधना एवं प्रयोगों के द्वारा विकसित किया। संगीत शिक्षण की यह गुरु- शिष्य परंपरा, राजा महाराजा के आश्रय में खूब पनपी। पाश्चात्य प्रभाव के कारणज्ञान – विज्ञान के सभी विषयों की शिक्षा विद्यालयों एवं संस्थाओं में होने लगी। निश्चित समयावधि के पाठ्यक्रम एवं परीक्षाओं तथा उपाधियों का प्रचलन हुआ । शिक्षा जगत में हुए इस परिवर्तन का प्रभाव संगीत शिक्षा के ऊपर पड़ना स्वाभाविक था । संगीत में रुचि रखने वाला प्रत्येक व्यक्ति संगीत शिक्षण का हकदार हो गया । अतः जन सामान्य को अधिकाधिक लाभ प्रदान करने की दृष्टि से संगीत में भी संस्थागत – सामूहिक शिक्षण का सूत्रपात हुआ । इसे बीसवीशताब्दी की देन कहा जा सकता है ।

संगीत की संस्थागत या विश्वविद्यालयीशिक्षण व्यवस्था का उद्भव-आधुनिक युग में , संगीत के संस्थागत – शिक्षण की व्यवस्था पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली के प्रभाव से बहुत विकसित हुई है परंतु इस विषय के शालेय– शिक्षण का प्रचलन , प्राचीन एवं मध्ययुग में भी यतत्र देखने में आता है। महाभारत में वरहन्नलारूपधारी अर्जुन की नियुक्ति विराट की राजकन्या की संगीत शिक्षा के लिए किए जाने का उल्लेख है। महाभारत काल में बड़े नगरों में संगीत शिक्षा के लिए संगीत शालाओं का प्रबंधशासन काल की ओर से किया जाता था तथा इनके सम्यक संचालन का समुचित प्रबंध रहता था। बोद्धकालमें तक्षशिला विद्यादान का प्रमुख केंद्र था, जिसमें वैदिक विद्यालय अष्टादश विद्यालय आदि विभिन्न अध्ययन – विभागों में पाँच - पाँच विद्यार्थी शिक्षा पाते थे ।

विश्वविद्यालयों में संगीत –संगीत शिक्षण संस्थाओं का समययदि देखें तो सर्वप्रथम 1874 में पंडित भास्कर बुआ बखलेने पूना में 'भारत गायन समाज' की स्थापना की। 1880 के करीब पंडित आदित्यराम ने जामनगर में संगीत का सामूहिक शिक्षण का प्रयास किया । सन 1886 में बड़ौदा में महाराजा सायाजीराव द्वारा'बड़ौदा स्टेट म्यूजिक स्कूल' की स्थापना हुई । उस्ताद मौलाबक्शइसके प्रधानाचार्य थे । सन 1890 में पारसी समुदाय ने बम्बई में 'गन्धर्वोतेजना मण्डल' बनाया ।संगीत की संस्थागत प्रणाली तथा विश्वविद्यालयों के विकास में संगीत की दो महान विभूतियों पंडित विष्णु दिगम्बरतथा पंडित विष्णु नारायण भातखंडेका महत्वपूर्ण योगदान रहा है।इन दोनों ने बीसवीसदी की शुरुवात में भारतीय शास्त्रीय संगीत को संस्थागत रूप देकर पारंपरिक गुरु – शिष्य परंपरा से निकालकर विश्वविद्यालई स्तर तक पहुंचाया । पंडित भातखंडेनें संगीत शिक्षा को सैद्धांतिक आधार दिया जबकि पंडित विष्णु दिगम्बरनेंसन 1901 में गांधर्व महाविद्यालय के माध्यम से संगीत को जन – साधारण तक पहुंचाया । पंडित विष्णु दिगम्बरएवं पंडित विष्णु नारायण भातखंडेके जीवन काल तक विश्वविद्यालयोंमें संगीत विभाग की स्थापना नहीं हुई थी क्योंकि संगीत विषय का

अध्ययन अध्यापन भी अन्य विषयों की भांति हो सकता है । इसकी कल्पना शिक्षित समाज में नहीं थी । सन 1926 में पंडित विष्णु नारायण भातखंडेजी ने लखनऊ में 'मैरिस कॉलेज ऑफ म्यूजिक' की स्थापना की । संगीत शिक्षण में विश्वविद्यालय के अंतर्गत संगीत कॉलेज की स्थापना का प्रथम श्रेय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को जाता है । सन 1950 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में 'श्री कला संगीत भारती' के नाम से म्यूजिक कॉलेज की स्थापना पंडित ओंकारनाथ ठाकुर द्वारा की गई । वर्तमान समय में इसका नाम संगीत एवं मंच कला संकाय है ।

वर्तमान समय में विश्वविद्यालय के अंतर्गत स्वतंत्र संगीत संकाय निम्नलिखित विश्वविद्यालयों में है जिसमें संगीत की शिक्षा विधिवत रूप से दी जाती है जो निम्नलिखित है-

1- कॉलेज ऑफ म्यूजिक ,डांस एवं ड्रामेटिक्स– बड़ौदा (महाराज सयाजी राव यूनिवर्सिटी)

2- भातखंडेसंस्कृति विश्वविद्यालयकैसरबाग़(लखनऊ)

3- गंधर्व महाविद्यालय

4- माधव संगीत महाविद्यालय (ग्वालियर)

5-इंदिराकला संगीत विश्वविद्यालय –खैरागढ़

6-राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय – ग्वालियर

1-कॉलेज ऑफ म्यूजिक , डांस एवंड्रमैटिक्स– बड़ौदा (महाराज सयाजी राव यूनिवर्सिटी)-

इसका पुराना नाम कॉलेज ऑफ म्यूजिक ,डांस एवं ड्रमैटिक्सथा इसकी स्थापना सन 1886 में मौलाबक्श ने 'गायन शाला' के रूप में की । यह संस्थागत संगीत शिक्षा के जगत में एक बड़ा कार्य था ।शुरुवात में यह शास्त्रीय संगीत के संरक्षण और प्रचार- प्रसार का केंद्र था बाद में यहMSU के संगीत एवंप्रदर्शनकलासंकाय (Faculty of performing Arts) का एक प्रमुख हिस्सा बन गया । इस संकाय में वाद्य संगीत का भी एक विभाग है । इस विभाग में सितार और वायलिन जैसे वाद्य यंत्रों में शिक्षा प्रदान की जाती है। संगीत का यह विभाग हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की पारंपरिक (गुरु- शिष्य) और संस्थागत दोनों पद्धतियों का उपयोग करके संगीत की शिक्षा प्रदान करता है । यह संकाय भारत के पश्चिमी क्षेत्र में शास्त्रीय संगीत का प्रमुख केंद्र है। यह विभाग पारंपरिक और आधुनिक शिक्षण प्रणालियों का मिश्रण है। यह संस्थान महाराजा सयाजीरावगायकवाड तृतीय के संगीत और कला के प्रति समर्पण का प्रमाण है।

2-गंधर्व महाविद्यालय –

पंडित विष्णु दिगम्बरपलुस्करजी ने जिस समय संगीत जगत में पदार्पण किया ,उस समय संगीत एवं संगीतज्ञ की स्थिति अत्यंत असम्मान पूर्ण थी । यह विद्या घरानों के बीच सिमट कर केंद्रित हो गई थी । सधारण जनता के लिय संगीत शिक्षा का ज्ञान मिलन अत्यंत कठिन कार्य था ।

गंधर्व महाविद्यालय की स्थापना 1901 में पंडित विष्णु दिगम्बरपलुस्करने लाहौरमेंकी थी ,जिसका प्रमुख उद्देश्य शास्त्रीय संगीत को राजदरबारों से निकालकर आम जनता तक पहुंचाना था । यह संगीत शिक्षा का संगीत के क्षेत्र में पहला प्रयास था इससे पहले संगीत को सभ्य समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता था । यह संगीत शिक्षा का पहला जन – सहयोगी संस्थान था । 1931 में , उनके शिष्यों ने इसका विस्तार किया तथा आखिर भारतीय गंधर्व महाविद्यालय मण्डल बनाया , जो आज संगीत के लिए एक शीर्ष संस्था है ।

3- भातखंडे संस्कृति विश्वविद्यालय (लखनऊ)-

प्रारंभ में इसका नाम 'मैरिस म्यूजिक कॉलेज' थायह लखनऊ (उत्तर प्रदेश) में स्थित एक प्रमुख राज्य विश्वविद्यालय है , इसकी स्थापना पंडित विष्णु नारायण भातखंडेद्वारा सन 1926 में हुई थी इसकी स्थापना भारतीय संगीत के संरक्षण के लिए की गई थी यह सन 2000 में डीम्ड यूनिवर्सिटी बना और सन 2022 में राज्य सरकार द्वारा 'राज्य विश्वविद्यालय' के रूप में पुनरगठितहोकर , वर्तमान में ललित कला ,नृत्य और संगीत पाठ्यक्रमों का संचालन कर रहा है । इस विश्वविद्यालय में महान संगीतज्ञ जैसे –वी. जी। जोग , एस. एन.रातंजनकर, अहमद जान थिरकुआने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है । यहाँ गायन , वादन , नृत्य तीनों विधाओं की शिक्षा दी जाती है ।

4-माधव संगीत महाविद्यालय (ग्वालियर)-माधव संगीत महाविद्यालय , ग्वालियर , हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का एक प्रतिष्ठित संस्थान है। इसकी स्थापना संगीतज्ञ पंडित विष्णु नारायण भातखंडे द्वारा 10 जनवरी 1918 को हुई थी । इस महाविद्यालय के बनने में राजा भैया पूछवाले तथा ग्वालियर के सिंधिया राज घराने ने अपना अत्यंत सहयोग दिया । इसके साथ ही विष्णु बुआ देशपांडे और

कृष्ण दते जैसे दिग्गज कलाकारों ने भी अपना सहयोग दिया है। यह महाविद्यालय ग्वालियर घराने की गायन शैली को संरक्षित करने और 'थाट' प्रणाली के अनुसार शास्त्रीय संगीत को बढ़ावा देने वाला प्रमुख केंद्र बना।

5-इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय (खैरागढ़)-इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय , खैरागढ़(छतीसगढ़) की स्थापना सन 1956 में हुई थी। यह एशिया का पहला कला विश्वविद्यालय है तथा पूरी तरह से संगीत , नृत्य , ललित कला और रंग मंच को समर्पित है। खैरागढ़ के राजा बीरेंद्र बहादुर सिंह और रानी पद्मावती देवी ने अपनी बेटी इंदिरा की याद में , जिनका छोटी उम्र में निधन हो गया था ,बनवाया था। यह विश्वविद्यालय खैरागढ़के राजमहल 'कमल विलास पैलेस' से संचालित होता है, जो की वास्तुकला का बेहतरीन नमूना है।

6- राजा मानसिंह तोमर संगीत संगीत एवं कला विश्वविद्यालय (ग्वालियर)- राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय , ग्वालियर (म.प्र.) की स्थापना 2008 में राज्य सरकार द्वारा की गई। यह विश्वविद्यालय 15वीं शताब्दी के राजा मानसिंह तोमर को समर्पित है जो की स्वयं एक कलाप्रेमीतथा ध्रुपद संगीत के संरक्षक थे। यह विश्वविद्यालय पूर्णतयः कला ,संगीत ,नृत्य और रंगमंच में शिक्षा प्रदान करता है।

इन सबके अलावा विभिन्न विश्वविद्यालयों में अलग से संगीतसंकाय तथा विभागों की स्थापना की गई जैसे – बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी का संगीत एवं मंच कला संकाय (1950), इलाहाबाद विश्वविद्यालय का संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग (1926), दिल्ली विश्वविद्यालय का संगीत एवं ललित कला संकाय (1960),पंजाब यूनिवर्सिटी का संगीत विभाग (1987), विश्व भारती विश्वविद्यालय , शांतिनिकेतन का संगीत भवन (1919), जम्मू विश्वविद्यालय का संगीत एवं ललित कला संस्थान (1965),कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल का संगीत विभाग (1973),हेमवती नंदन बहुगुणा विश्वविद्यालय का संगीत विभाग(1979), हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय का संगीत विभाग (1971),राजस्थान विश्वविद्यालय का संगीत विभाग (1973),जयनारायणव्यास विश्वविद्यालय ,जोधपुर का संगीत विभाग (1962), वनस्थली विद्यापीठ संगीत विभाग (1943), मोहन लाल सुखाड़ियाविश्वविद्यालय संगीत विभाग ,उदयपुर , हरी सिंह गौर विश्वविद्यालय (सागर विश्वविद्यालय संगीत विभाग (1946),सिक्किम विश्वविद्यालय संगीत विभाग (2007), त्रिपुरा विश्वविद्यालय संगीत विभाग (2009), महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी (1921), मुंबई विश्वविद्यालय संगीत विभाग (1857), ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा (1972), पटना विश्वविद्यालय संगीत विभाग (1950), गंधर्व महाविद्यालय पुणे (1932)एवं प्रयाग संगीत समिति प्रयागराज ,(1926), प्राचीन कला केंद्र चंडीगढ़ (1956),भातखंडे संगीत विद्यापीठ लखनऊ (1926), गंधर्व महाविद्यालय दिल्ली (1939) आदि। इन सभी महाविद्यालयों ने संगीत के संरक्षण एवं संवर्धन में बहुत अधिक योगदान दिया है इन संगीत के विश्वविद्यालयों में स्नातक, स्नाकोत्तर ,पी एच. डीतथा डी.लिट उपाधि तक पढ़ाई होती है कई विश्वविद्यालयोंमें अन्य विषयों के छात्रों के लाभार्थ डिप्लोमा कक्षाएं भी चलती हैं। इन डिप्लोमा कक्षाओं की शिक्षा का उद्देश्य अन्य विषयों के छात्रों को संगीत की प्रारम्भिक जानकारी कराना तथा उनको अपने देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का दर्शन व परिचय कराना है।

संगीत में उच्च शिक्षा का उद्देश्य –

संगीत के विश्वविद्यालयों में दी जानेवालीसंगीत की उच्च शिक्षा के उद्देश्य भिन्न है-

1- छात्र – छात्राओं को संगीत के क्रियात्मक एवं शास्त्रपक्ष की सांगोपांग जानकारी करवाना।

2- सक्षम छात्र – छात्राओं को क्रियात्मक संगीत में प्रवीणता पाने के लिए उनका मार्ग प्रशस्त करना।

3- योग्य एवं जानकार संगीत शिक्षक , समीक्षक तैयार कराना।

4- छात्र छात्राओं में सृजनात्मक (नवीन रचना) क्षमता का विकास कराना।

5- संगीत में शोध – कार्य का मार्ग प्रशस्त कराना।

अनुसंधान एवं शोधकार्य –गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत संगीत के क्रियात्मक पक्ष पर अधिक बल होने के कारण संगीत मात्र प्रदर्शनात्मककला तक ही सीमित था। यदि कलाकार का मंच प्रदर्शन अच्छा होता तो बस यही काफी माना जाता और कलाकार को उसके लिए पुरिष्कृतकर दिया जाता ,परंतु वर्तमान शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में विद्यालईशिक्षा के अंतर्गत संगीत के व्यावहारिक पक्ष के साथ- साथ सैद्धांतिक पक्ष पर भी बल दिया जाने लगा है और संगीत ने सैद्धांतिक और क्रियात्मक अध्ययनों की दृष्टि से नई दिशाएं दी है तथा नियम विस्तार किए हैं।'कर्नाटकीऔर हिन्दुस्तानी संगीत' के अनेक भारतीय तथा विदेशी विद्वानों ने इस सैद्धांतिक अध्ययन तथा ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय संगीत पर महत्वपूर्ण कार्य किया है। लेकिन सङ्गीतशास्त्रनाम से एक क्रमबद्ध तथा नियमित

अनुसंधान अध्ययन का विकास हमारे देश में स्वतंत्रता के बाद ही हुआ । आज सभी महत्वपूर्ण विश्वविद्यालयों में संगीत विभाग खुल चुके हैं ।

निष्कर्ष –

उत्तर भारत के विश्वविद्यालयों ने संगीत के संरक्षण और संवर्धन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है इन विश्वविद्यालयों ने न केवल परंपरागत संगीत जैसे घरानेदारसंगीत को संरक्षित करने का कार्य कर रही है बल्कि आधुनिक संदर्भों में प्रासंगिक बने रखने का कठिन प्रयास कर रही है । संगीत के माध्यम से शैक्षणिक पाठ्यक्रमों , शोध कार्यों ,संगोष्ठियों , कार्यशालाओं तथा सांस्कृतिक आयोजनों के माध्यम से विश्वविद्यालयों ने संगीत को पीढ़ी दर पीढ़ी तक पहुँचने में एक सेतु का कार्य किया है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1- कुमार ऋषितोष,संगीत शिक्षण के विविध आयाम ,प्रथम संस्करण 2010, कनिष्क पब्लिशर्स, डीशरीबूटर्स
2-पालनीतकर अलकनंदा ,शास्त्रीय संगीत शिक्षा समस्याएं एवं समाधान ,प्रथम संस्करण 2006 ,अर्जुन पब्लिशिंगहाउस
3-अमरेश चंद्र चौबे , संगीत की संस्थागत शिक्षण- प्रणाली ,प्रथम संस्करण 1988,जयकृष्ण अग्रवाल कृष्ण ब्रदर्स
4- कपूर तृप्त ,उत्तरी भारत में संगीत शिक्षा ,प्रथम मुद्रित 1989,हरमन पब्लिशिंग हाउस
5-कुमार यमन अशोक ,संगीत रत्नावली ,पुनर्मुद्रण 2020,,अभिषेक पब्लिकेशन